Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

जून 2023 (प्रथम)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आयोजित आर्य वीर एवं वीरांगना शिविर के कार्यक्रम के दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य तथा अन्य अधिकारियों, कर्मचारियों तथा आर्य वीर युवकों द्वारा नशामुक्त भारत संकल्प रथ यात्रा को हरी झण्डी दिखाते हुए।

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आयोजित आर्य वीर एवं वीरांगना शिविर के कार्यक्रम के दौरान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संरक्षक श्री कन्हैयालाल आर्य का सम्मान करते हुए स्वामी आदित्यवेश, सभाप्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान श्री राजकुमार आर्य, महामहिम राज्यपाल गुजरात के ओ.एस.डी. डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार, सभा के अन्तरंग सदस्य श्री राममेहर आर्य तथा अन्य उपस्थित अधिकारीगण।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक द्वारा संचालित गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आयोजित आर्य वीर एवं वीरांगना शिविर के कार्यक्रम के दौरान गुरुकुल झज्जर के स्नातक आचार्य विरजानन्द दैवकरणि का सम्मान करते हुए स्वामी आदित्यवेश, सभाप्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के संरक्षक श्री कन्हैयालाल आर्य, गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान श्री राजकुमार आर्य, महामहिम राज्यपाल गुजरात के ओ.एस.डी. डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार, सभा के अन्तरंग सदस्य श्री राममेहर आर्य तथा अन्य उपस्थित अधिकारीगण।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,124
विक्रम संवत् 2080
दयानन्दाब्द 200

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 19 अंक 9

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जून, 2023 (प्रथम)
1 से 15 जून, 2023 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय–वेद-प्रवचन 2
2. विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी 4
3. युवा-मृत्यु पर एक चिन्तन 5
4. नास्तिकता भी एक अन्धविश्वास है 7
5. कविता-देशभक्त गुणवान बनो 8
6. भारतीय शिक्षा प्रणाली से ही विश्व में सुख-शान्ति और समृद्धि आ सकती है 9
7. सगोत्र विवाह का निषेध क्यों? 11
8. प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर 12

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

–सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन–उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

कुछ आचार्यों ने '**नसदासीन्नासदासीत्**' के आधार पर अनिर्वचनीय[1] माया के सिद्धान्त की स्थापना की है। परन्तु याद रखना चाहिए कि कोई वस्तु जिसका निर्वचन करने की शास्त्रों में चर्चा की है अनिर्वचनीय नहीं है और जो मूर्ख हैं उनके लिए तो सभी बातें 'काला अक्षर भैंस बराबर' अनिर्वचनीय ही हैं। 'माया' अगर कोई चीज 'नहीं है' तो उसके ऊपर 'जगत्' की स्थिति कैसी? और यदि 'है' तो उस पर जगत् के मिथ्यात्व की स्थिति कैसी? अनिर्वचनीय वस्तु यदि 'अमननीय' हो तो मन्तव्य नहीं हो सकती। यदि 'मननीय' है तो उसका निर्वचन भी अवश्य हो सकेगा।[2] निश्चलदास जी कहते हैं कि 'माया' न तो खरगोश के सींग के समान 'असत्' है न ब्रह्म के समान 'सत्', इसलिए अनिर्वचनीय है। यह कसौटी तो 'मुक्तपुरुष' पर भी लागू होगी, क्योंकि मुक्तपुरुष न तो खरगोश के सींग के समान 'असत्' है न ब्रह्म के समान 'सत्', फिर 'समान' का भी

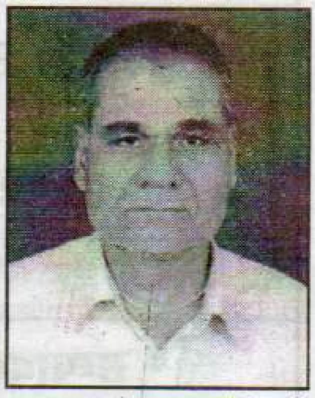

क्या अर्थ लिखा जाए–अनन्यत्व या 'सादृश्य'? श्री शंकरस्वामी ने वेदान्तदर्शन (2.2.33) के सूत्र 'नैकस्मिन्नसम्भवात्' के भाष्य में लिखा है–

न ह्येकस्मिन् धर्मिणि युगपत् सदसत्त्वादिविरुद्धधर्म-समावेशः सम्भवति शीतोष्णवत्।

अर्थात् एक ही वस्तु में सत् और असत् दो विरुद्ध धर्म एक साथ नहीं रह सकते जैसे ठण्डक और गरमी।

फिर आगे जैनियों के स्याद्वाद का मखौल उड़ाते हुए लिखा–

अवक्तव्याश्चेन्नोच्येरन्।

उच्यन्ते चावक्तव्याश्चेति विप्रतिषिद्धम्।

अर्थात् यदि कोई पदार्थ अवक्तव्य है तो कहा कैसे जाता है? कहा जाए और अवक्तव्य भी हो, ये दो विरुद्ध बातें कैसे हो सकती हैं? जो बात 'अवक्तव्य' पर लागू

---

1. देखो 'अद्वैतवाद' अध्याय 10
तथा श्री आचार्य आनन्दतीर्थ कृत–'कर्मनिर्णय'–
"न चानिर्वचनीयविशेष इति भवति। अनिर्वचनीयासिद्धे०। न हि तत्र प्रत्यक्षमस्ति। मिथ्याशब्दस्त्वभाववाच्येव। तदन्यत्र-प्रमाणाभावात्। न चान्यत् प्रमाणम्। प्रतिज्ञा व्याहतेः न हि सदन्तराद् असतश्चान्यत् सदसद् विलक्षणं प्रसिद्धम्। असन्नभवतीत्युक्ते द्वौ नञौ प्रकृतमर्थं सातिशयं गमयत इति सदेव भवति।"
तात्पर्य यह कि 'अनिर्वचनीय' कोई वस्तु सिद्ध नहीं होती। उसके लिए न प्रत्यक्ष प्रमाण है न कोई अन्य। 'असद् नहीं है' ऐसा कहने में दो नकार आते हैं। इसका अर्थ हो जाता है कि 'सद् ही है'। पाठक मूल पुस्तक को पढ़ें।
2. श्री आनन्दतीर्थ आचार्य (मध्वाचार्य) ने अपने ग्रन्थ 'तत्त्वोद्योत' में माया के अनिर्वचनीय न होने पर इसी मन्त्र को उद्धृत करके एक टिप्पणी दी है–
नासदासीन्नोसदासीत् तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् इति अत्र च परिशिष्येणानिर्वचनीयत्वांगीकारे 'आनीदवातं स्वधया तदेकं' इति तदानीं परिशिष्टत्वाद् ब्रह्मणोपि अनिर्वचनीयत्वं स्यात्। मूर्तं सत् इति संप्रोक्तं अमूर्तं असद् उच्यते। मूर्तोमूर्तेतर ब्रह्म न सत् सत् न असद् उच्यते इति पैंगि श्रुतिः।
अर्थात् यदि 'न असत् था', 'न सत् था' इससे माया की अनिर्वचनीयता मानते हो तो इस हेतु से आगे के मन्त्र में जो कहा, '**आनीदवातं स्वधया तदेकम्**' (अर्थात् वह ब्रह्म बिना वायु के, स्वधा अर्थात् उपादान कारण के साथ प्राणक्रिया करता था) यहाँ ब्रह्म भी 'अनिर्वचनीय' कहलायेगा। पैंगि-श्रुति में कहा है कि जो मूर्त है उसे सत् कहा, जो अमूर्त है उसको असत् कहा। मूर्त और अमूर्त दोनों प्रकार के स्थूल तथा सूक्ष्म जगत् से जो भिन्न है वही सृष्टि का मूल कारण ब्रह्म है।

है वही अनिर्वचनीय पर भी[1], क्योंकि दोनों शब्द पर्य्याय हैं। इसलिए 'अनिर्वचनीय माया' के लिए मन्त्र में बीज खोजना भूल है। इतना ही कहा जा सकता है कि सृष्टि प्रत्यक्ष है, सृष्टि से पूर्व की अवस्था परोक्ष है। परोक्ष का अनुमान प्रत्यक्ष के द्वारा किया जाता है। सृष्टि के पूर्व जो अवस्था थी उसका अनुमान भी सृष्टि को देखकर ही लगाया जा सकेगा।

इसी सूक्त के छठे मन्त्र में कहा है-"**अर्वाग् देवा अस्य विसर्जने-नाथा को वेद यत् आबभूव**" (ऋ० 10.129.6) अर्थात् (देवा:) इन्द्रियां तो पीछे से हुईं। सृष्टि से पहले तो इन्द्रियाँ थीं नहीं, अत: वे बेचारी क्या बता सकेंगी कि सृष्टि का मूल कारण क्या है? इन्द्रियों के लिए तो ब्रह्म 'कर्त्ता' भी परोक्ष है और उपादान कारण प्रकृति भी परोक्ष। मेरे परबाबा की माँ थी। मेरे लिए तो परबाबा भी परोक्ष और माँ भी परोक्ष फिर भी ये दोनों थे-अनिर्वचनीय न थे और अमानवीय भी नहीं, केवल मेरी दृष्टि में स्पष्ट या व्यक्त न थे। इसलिए वेदमन्त्र में निषेधवाचक 'नकार' का प्रयोग हुआ है। लोक-लोकान्तर

1. देखो 'कुरान' सूरत 'अज्जारियात् आयत' 56,57

"व मा खलकतु ज्जिन वल् इन्स इल्ला लिय अबुदूनि। माँ उरीदो मिनहुं अंयृयुत्यिमूनि।"

"खुदा कहता है कि मैंने जिन्नों को और इनसान को इसलिए बनाया है कि मेरी पूजा करें। मैं उनसे यह आशा नहीं रखता कि वे मुझे खिलायेंगे।"

यहाँ प्रश्न तो स्वाभाविक था, परन्तु उत्तर तो कुछ नहीं मिला। क्या ये समस्त प्राणिवर्ग जो अनेक सुख और दु:ख भी भोगते हैं और जिनको ईश्वर का कुछ भी ज्ञान नहीं ईश्वर ने अपनी पूजा के लिए बनाये हैं? ईश्वर को यह पूजा क्यों इतनी प्रिय है कि मनुष्यों को बनाकर इतना कष्ट देता है? एक फारसी के कवि ने झुझलाकर एक शेर कहा है-

दरमियाने क़इर दरिया तख्ताबन्दं करदई।
बाज् मे गोई कि दामन तर मकुन हुशियार बाश॥

हे भगवान्! आपने मुझे गहरे समुद्र के गढ़े में डालकर एक तख्ते से बांध दिया। अब कहते हो कि सावधान रह, कपड़ा न भीग जाए।

तो हो ही कैसे सकते हैं? ऊपर जो आँख से नीला-नीला 'व्योम' दीखता है वह लोक-लोकान्तर की ही अपेक्षा से है। यदि लोक-लोकान्तर न होते तो अन्तरिक्ष अर्थात् बीच के पोल का भी कोई अनुभव न होता।

इतनी हुई सृष्टि के अदृष्ट होने की बात। अब सृष्टि की उपयोगिता की बात पर विचार कीजिए। भोग होता है भोग वाले की अपेक्षा से-'**जीवानामुपभोगार्था हि सृष्टि:**' (सायण) जीवों के उपभोग के लिए ही सृष्टि होती है। किसके उपभोग को कौन ढकने वाला है? यह प्रश्न है। इसका आगे उत्तर दिया है-**रेतोधा आसन्** (मन्त्र 10.129.5)। प्रलय-अवस्था में ऐसे जीव रहते हैं, जिनके कर्मों के बीज रहते हैं। इनका फल देने के लिए ही सृष्टि होती है। ईश्वर सृष्टि क्यों बनाता है? वेद ने यह प्रश्न भी उठाया और उसका उत्तर भी दिया। नास्तिक तो इसका उत्तर दे ही नहीं सकते। भोगने वाले आत्मतत्त्व का उनके दर्शन में कोई स्थान नहीं, जो आस्तिक लोग यह नहीं मानते कि जीवों की अपनी अलग सत्ता है वे भी इसका उत्तर दे नहीं सकते।[1] प्रश्न तो उनके मन में भी उठता है परन्तु उचित उत्तर न पाकर वह प्रश्न दब जाता है। बात यह है कि सृष्टि से पूर्व की अवस्था बड़ी 'गभीर' गहरी और 'गहन' कठिन है। उसको वेद में 'अम्भ:' अर्थात् 'तरल' बताया है। तरल पदार्थ वह है जिसे पकड़ नहीं सकते। पानी तरल है, हवा तरल है। परन्तु 'कुहरा' तरल भी है और गहन भी, क्योंकि वायु और जल दूसरी चीजों के दृष्टिगोचर होने में बाधक नहीं होते। कुहरा न तो स्वयं दिखाई पड़ता है न दूसरी चीजों को दिखाई पड़ने देता है। यह है सृष्टि की अव्यक्त अवस्था। कार्य कारण में है भी और नहीं भी है। जब व्यक्त होगा तभी तो उसको सृष्टि कह

शेष पृष्ठ 11 पर....

1. अम्भस्=celestial waters. —Monier M. Willam
अम्भस्=अबम्भ शब्दे+तुमुन्
or आप् × असुन् —Apte
उदके नुम्भौ च=उणादि 4-209
water, sky. —Apte

विदुर-नीति प्रश्नोत्तरी

❑ संकलन–कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक–आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

इन सब बातों की जांच करके ही किसी व्यक्ति के कुल की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

यदि कोई पुरुष मांसाहारी है, उसका जन्म-स्थान दूषित है, उसका आवास गृह गन्दगी से भरा है, वह सेवा आदि कार्यों में रुचि नहीं लेता, वह बेढंगे वस्त्र पहनता है तो ऐसा व्यक्ति कुलीन नहीं कहा जा सकता है। जिसके कार्य इनके विपरीत हैं वह व्यक्ति कुलीन माना जाएगा।

प्रश्न 26. महात्मा विदुर ने शरीर के अभिमान से रहित तथा कामनाओं में आसक्त मनुष्य की तुलना कैसे की है?

उत्तर-शरीर के अभिमान से रहित मनुष्य भी स्वतः प्राप्त (न्याययुक्त पदार्थ) अभीष्ट वस्तु का विरोध नहीं करता, उसे स्वीकार कर लेता है, फिर कामासक्त पुरुष का तो कहीना ही क्या है?

प्रश्न 27. किन-किन की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिए?

उत्तर-(1) विद्वानों की सेवा करने वाले की।

(2) वैद्य (रोग निवारण करने में दक्ष) की।

(3) धार्मिक अर्थात् जो धर्मानुसार आचरण करता हो, उसकी।

(4) जिनके दर्शन मात्र से प्रसन्नता हो जाये उसकी। अंग्रेजी में इसे Love at first sight कहा गया है।

(5) जिनके मित्र अधिक हों, अर्थात् मित्रों से युक्त व्यक्ति की।

(6) मधुरभाषी (मीठा बोलने वाले) मित्र की। इन उपर्युक्त व्यक्तियों की सब प्रकार से रक्षा करनी चाहिए।

यहाँ विदुर जी का आशय पाण्डवों की प्रशंसा से है। पाण्डव विद्वानों की सेवा करते हैं, वन, उपवनों में घूमने के कारण स्वयं अपना इलाज कर लेते हैं, इनकी सरलता के कारण इनके दर्शन मात्र से प्रसन्नता प्राप्त होती है, वे मधुरभाषी हैं, इसलिए उनके सभी मित्र बन जाते हैं। यहाँ विदुर जी पाण्डवों की प्रशंसा के माध्यम से दुर्योधनादि को भी ऐसे गुण ग्रहण करने की प्रेरणा कर रहे हैं।

प्रश्न 28. कैसा मनुष्य सैकड़ों कुलीनों से उत्तम है?

उत्तर-(1) चाहे उत्तम कुल में जन्म लिया हो या अधम कुल में, परन्तु जो मनुष्य मर्यादा (सीमा) का उल्लंघन नहीं करता।

(2) जो धर्मानुसार कार्य करने वाला है।

(3) जिसका स्वभाव कोमल है।

(4) जो लज्जाशील है।

ऐसा मनुष्य उत्तम कुलोत्पन्न सैकड़ों मनुष्यों से श्रेष्ठ है अर्थात् कुल से शील=आचरण श्रेष्ठ होता है।

प्रश्न 29. किन मनुष्यों की मित्रता जीर्ण नहीं होती? अर्थात् किन मनुष्यों की मित्रता अटूट होती है?

उत्तर-(1) जिन दो मनुष्यों का चित्त के साथ चित्त मेल खाता है।

(2) जिन दो मनुष्यों का गुप्त रहस्य के साथ गुप्त रहस्य मेल खाता है।

(3) जिन दो मनुष्यों की बुद्धि बुद्धि के साथ मेल खाती है।

उनकी मित्रता जीर्ण नहीं होती, टूटती नहीं, अटूट रहती है।

प्रश्न 30. किनके साथ हुई मित्रता नष्ट हो जाती है?

उत्तर-(1) बुद्धिमान् को चाहिए कि वह मूर्खों को त्याग दे।

(2) विवेकशून्य व्यक्ति को त्याग दे।

उपर्युक्त व्यक्तियों को इस प्रकार त्याग दे जिस प्रकार तिनके से ढके हुए कुंए को त्यागने में बुद्धिमत्ता है अन्यथा कुंए में गिर जाएगा। इसी प्रकार बुद्धिमान् का कर्त्तव्य है कि मूर्ख एवं विवेकशून्य को त्याग दे नहीं तो कुंए में गिरेगा अर्थात् उसका पतन होगा।

क्रमशः अगले अंक में...

युवा-मृत्यु पर एक चिन्तन

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य, संपर्क-B-2, 92/7B, शालीमार नगर, जिला होशियारपुर (पंजाब) मो० 9464064398

अनेक बार अकस्मात् युवाओं की मौत की घटनायें भी हमारे सामने आती रहती हैं। नि:सन्देह ऐसी घटनाएं अधिकतम किसी न किसी प्रकार की दुर्घटना के कारण ही होती हैं। तब सारी बात सामने आने पर प्राय: यही शब्द सुनाई देते हैं कि मौत कोई न कोई बहाना बना ही लेती है, भगवान् की मर्जी ही ऐसी थी, विधि के विधान को कौन टाल सकता है? देखो! किस प्रकार परिस्थितियों को बदलकर, क्योंकि मृतक की उस दिन की दिनचर्या कुछ और थी, तब उसमें यह परिवर्तन आया और काल ने इसको अपना ग्रास बना लिया।

उस समय निकट से निकटतम रिश्तेदार जहां विलाप करते हुए अपनी हार्दिक वेदना प्रकट करते हैं, वहां ऐसे अवसर पर आने वाला प्रत्येक अपना दु:ख प्रकट करता है। तब प्राय: प्रत्येक यही कहता हुआ सुनाई देता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए था। यह अच्छा नहीं हुआ, ऐसा बुरा क्यों हुआ? हमारा ऐसा सोचना, इस दुर्घटना को इस रूप में पसन्द न करना, इस बात का प्रमाण है कि सभी का दिल यह मान रहा है, यह ठीक नहीं हुआ, क्योंकि दिल की गहराइयों से जो निकलता है, वह सत्य होता है। तभी तो कहा है-'**प्रमाणमन्त:करणप्रवृत्तय:**'- कालिदास-अभिज्ञानशाकुन्तलम्। ऐसा कोई एकाध ही नहीं चाहता, अपितु सभी की यही चाहना होती है।

इस दुर्घटना के इस रूप को पसन्द न करने से यह सिद्ध होता है कि यह सब प्रभु की इच्छा से नहीं हुआ। क्योंकि ईश्वर तो सबका परमपिता है और पिता सदा ही अपनों का भला ही चाहता है तथा करता है। जब संसारी पिता हर तरह से अपने बच्चों का भला ही करने का यत्न करता है। जिस कृपालु प्रभु ने हमारे भले के लिए एक से एक अद्भुत भौतिक, प्राकृतिक पदार्थ दिए हैं। वह दयालु प्रभु फिर किसी का बुरा कैसे कर सकता है? जब हम सब इसको अच्छा नहीं समझते, तो वह सबका हित चाहने वाला कैसे ऐसा चाह सकता है? ईश्वर कर्मफलदाता है, पर वह न्यायकारी कर्मफलदाता है। वह सर्वज्ञ होने से पूर्ण न्याय करता है अर्थात् दूध का दूध पानी का पानी करता है।

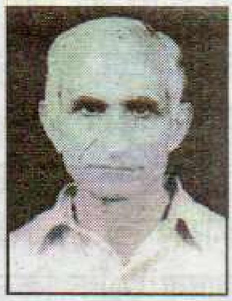

नि:सन्देह यह घटना, यह बात एक सामान्य घटना, बात नहीं है, अपितु यह एक विशेष घटना, बात है। क्योंकि हम अपने चारों ओर प्राय: यही देखते हैं कि हर भौतिक चीज (जो पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश जैसे पांच भूतों से बनी है, वह) परिवर्तनशील होने से अपने-अपने रूप के अनुरूप एक दिन पूर्ण, ओझल हो जाती है। हां, कई बार कुछ जरा-जीर्ण, वृद्ध, घिसने सेपूर्व भी पूरी हो जाती हैं। वे किसी न किसी विशेष कारण, बात के कारण ही ऐसी स्थिति को प्राप्त होती हैं। अत: उनको विशेष बात, घटना कहते हैं, तभी तो सभी को वे अनोखी, विचित्र लगती हैं। वहां विशेष बात क्या है? यह विशेष बात से विचारने वाली गुत्थी है, विशेष विचारणीय बात कही जा सकती है।

इस प्रकार की विशेष बात, घटना की गहराई, पूर्व पृष्ठभूमि, कहानी में जब जाते हैं, तो उस दुर्घटना में अनेक बार जहां अपनी लापरवाही, असावधानी, अज्ञानता, गलती होती है या मशीन की कुछ गड़बड़ होती है। बहुत बार वहां इस तरह की दुर्घटनाओं में कुछ की लापरवाही, असावधानी या कुछ की अपराध की भावना भी सामने आती है। जो कि योजना बनाकर जानबूझकर अपराध करते हैं। जैसे कि कनिष्क विमान की दुर्घटना, जिसमें 23 जून 1985 को 329 की मृत्यु हुई थी तथा 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के वाशिंगटन, न्यूयार्क में किया गया आतंकवादी हमला, जिसमें 5 हजार के लगभग की मृत्यु हुई और तीन विशाल भवन अग्नि की भेंट हो गए। इस प्रकार की छोटी-बड़ी दुर्घटनाएं हमारे चारों ओर प्रतिदिन हो रही हैं। तब स्वाभाविक रूप से अपराधियों

को खोजकर दण्ड देने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार के प्रयास को सभी पसन्द करते हैं। इससे भी यह सिद्ध होता है कि यह भगवान की मर्जी नहीं है और न ही विधि का विधान है। तभी तो हम ऐसी मौतों को पसन्द नहीं करते और अपराधियों को दिए जाने वाले दण्ड के प्रयास को पसन्द करते हैं।

परमपिता परमेश्वर सदा ही सब का हित ही चाहता और करता है, क्योंकि सर्वज्ञ होने से वही पूरी तरह से जानता है कि किसी का हित किस में है। फिर हमारे सर्वज्ञ पिता परमेश्वर की इच्छा से किसी की अकाल मृत्यु कैसे हो सकती है?

इस प्रकार की युवाओं की मृत्यु की रस्म पगड़ी पर प्राय: धार्मिक प्रवक्ता परिवार को और विशेषत: पिता, पत्नी, पुत्र आदि को दुर्भाग्यशाली मानते हैं और उनको कुछ प्राचीन कथानक सुना-सुनाकर कोसते हैं। इस प्रकार उनमें आत्मग्लानि, आत्महीनता उभरकर उनके मन, धैर्य को कमजोर किया जाता है। जबकि इन बदली परिस्थितियों में परिवार के लिए धैर्य ही एकमात्र आधार होता है। सब्र ही सब से बड़ा सहारा होता है। अत: हम सबको ऐसे भाव सामने लाने चाहिएं, जिसने उन सब वियुक्तों, दु:खियों को धैर्य मिले, सब्र हो। जिससे ये इस नई आपत्ति, बाधा, अड़चन पर धीरज के साथ पार पा सकें। कभी न कभी हर एक सामने किसी न किसी प्रकार की विपरीत परिस्थिति, विपत्ति, अड़चन, बाधा आ जाती है। ऐसी स्थिति में धीरता के धारण से ही उस विपरीत परिस्थितियों को सहा जा सकता है और उस-उस से निकला जा सकता है। घबरा जाने से, धैर्य छोड़ देने से आपत्ति और अधिक बढ़ती ही है। दु:ख, कष्ट, क्लेश और भी अधिक हावी होते हैं। तभी तो दृष्टान्त सहित समझाते हुए कहा है-

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले,
धैर्यात्कदाचिद् गतिमाप्नुयात्।
यथा समुद्रेऽपि पोतभङ्गे,
सांयन्त्रिको वाञ्छति तर्तुमेव॥

(पंचतत्त्व मित्रभेद 319)

जब हिम्मत करके इस दु:ख को सहने का प्रयास कर रहे होते हैं, तब उनकी हिम्मत की दाद ही देनी चाहिए। यदि कोई उनको किसी प्रकार से दुर्भाग्यशाली कह-कहकर उनके ढाढस को गिराने की बात करता है, तो यह उचित नहीं, क्योंकि इसका उलटा प्रभाव होता है। जब मौत की घटना सामयिक रूप में स्पष्ट ही हो, कम से कम तब तो ऐसी चर्चा करना कि बाप के सामने बेटे की अर्थी उठी है, अत: यह घोर कलियुग है, दुर्भाग्य की बात है, पूर्व के किन्हीं कर्मों का फल है? इस प्रकार की बातों से किसी का मन, धैर्य ही कमजोर होता है। वस्तुत: इस स्थिति में हर तरह से धैर्य को बढ़ाने की सबसे पहली जरूरत होती है। हां, जब हम यह कहते हैं कि सभी अपने-अपने कर्मों का फल ही प्राप्त करते हैं और कोई भी दूसरे के कर्मफल में दखल नहीं दे सकता, क्योंकि न्यायकारी की यह कर्मफल व्यवस्था सर्वथा पूर्ण है। तभी तो कहा है-

मेरे दाता के दरबार में, सब लोगों को खाता।
जैसा जो कोई कर्म करे, वैसा ही वह फल पाता।
विश्वपति जगदीश तू....
दाता तेरे दरबार में, होता सदा न्याय है।
चलती है न रिश्वत, सिफारिशें, चलता न कोई नाम है।

आचार्य वेदमित्र जी वैदिक योगाश्रम आश्रम व गोशाला भऊ के ब्रह्मत्त्व में पर्यावरण दिवस पर बृहद यज्ञ दर्शन योग महाविद्यालय रोहतक में स्वामी शान्तानंद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आचार्य जी ने यज्ञ के अध्यात्मिक महत्त्व पर प्रकाश डाला एवं अनिल आर्य ने आचार्य जी को सम्मानित किया।

नास्तिकता भी एक अन्धविश्वास है

❑ डॉ. विवेक आर्य

गतांक से आगे....

अब प्रश्न यह है कि धर्म और विज्ञान में क्या सम्बन्ध है और क्योंकि नास्तिक लोगों का यह मत है कि धर्म और विज्ञान एक-दूसरे के शत्रु हैं। नास्तिक लोगों की इस सोच का मुख्य कारण यूरोप के इतिहास में चर्च द्वारा बाइबिल के मान्यताओं पर वैज्ञानिकों द्वारा शंका करना और उनकी आवाज़ को सख्ती से दबा देना था। उदाहरण के लिए गैलिलियो को इसलिए मार डाला गया, क्योंकि उसने कहा था कि पृथ्वी सूर्य के चारों और भ्रमण करती है जबकि चर्च की मान्यता इसके विपरीत थी। चर्च ने वैज्ञानिकों का विरोध आरम्भ कर दिया और उन्हें सत्य को त्याग कर जो बाइबिल में लिखा था उसे मानने को मजबूर किया और न मानने वालों को दण्डित किया गया। इस विरोध का यह परिणाम निकला की यूरोप से निकलने वाले वैज्ञानिक चर्च को अर्थात् धर्म को विज्ञान का शत्रु मानने लग गए और उन्होंने ईश्वर की सत्ता को नकार दिया। दोष चर्च के अधिकारियों का था नाम ईश्वर का लगाया गया। यह विचार परम्परा रूप में चलता आ रहा है और इस कारण से वैज्ञानिक अपने आपको नास्तिक कहते हैं।

अब प्रश्न यह उठता है कि धर्म और विज्ञान में क्या सम्बन्ध है? इसका उत्तर है कि "Religion and Science are not against each other but they are allies to each other" अर्थात् धर्म और एक-दूसरे के विरोधी नहीं अपितु सहयोगी है। जैसे विज्ञान यह बताता है कि जगत् कैसे बना है, जबकि धर्म यह बताता है की जगत् क्यूँ बना है। जैसे मनुष्य का जन्म कैसे हुआ यह विज्ञान बताता है जबकि मनुष्य का जन्म क्यूँ हुआ यह धर्म बताता है।

भौतिक विज्ञान के लिए आध्यात्मिक शंकाओं का समाधान करना असंभव है मगर इनका समाधान धर्म द्वारा ही संभव है। धर्म और विज्ञान दोनों एक दूसरे के सहयोगी है और इसी तथ्य को आइंस्टीन ने सुन्दर शब्दों में इस प्रकार से कहा है- "Science without religion is a lame and religion without science is blind." विज्ञान धर्म के मार्गदर्शन के बिना अधूरा हैं और सत्य धर्म विज्ञान के अनुकूल है, अन्धविश्वास अवैज्ञानिक होने के कारण त्याग करने योग्य है।

एक कुतर्क यह भी दिया जाता है की अगर ईश्वर है तो उन्हें वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध करके दिखाए। इसका समाधान वायु के अतिरिक्त मन, बुद्धि, सुख, दु:ख, गर्मी, सर्दी, काल, दिशा, आकाश ये सभी निराकार है। क्या ये सभी वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध होते है? नहीं। परन्तु फिर भी इनका अस्तित्व माना जाता है फिर केवल ईश्वर को लेकर यह शंका उठाना नास्तिकता का समर्थन करने वाले की निष्पक्षता पर प्रश्न उठाता है। सत्य यह है कि वैज्ञानिक प्रयोगों से ईश्वर की सत्ता को सिद्ध न कर पाना आधुनिक विज्ञान की कमी है जबकि आध्यात्मिक वैज्ञानिक जिन्हें हम ऋषि कहते हैं चिरकाल से निराकार ईश्वर को न केवल अपनी अंतरात्मा में अनुभव करते आ रहे हैं अपितु जगत के कण-कण में भी विद्यमान पाते हैं।

दंगे, युद्ध, उपद्रव आदि का दोष ईश्वर को देना एक और मूर्खता है। यह पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है कि दंगे, उपद्रव आदि मज़हब या मत-मतान्तर आदि को मानने वालों के स्वार्थ के कारण होता है ना कि धर्म के कारण होता है। एक उदाहरण लीजिये 1947 से पहले हमारे देश में अनेक दंगे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच में हुए थे। इन दंगों का मुख्य कारण यह बताया जाता था की हिन्दुओं के धार्मिक जुलूस के मस्जिद के सामने से निकलने से मुसलमानों की नमाज में विघ्न पड़ गया जिसके कारण यह दंगे हुए। मेरा स्पष्ट प्रश्न है कि जो व्यक्ति ईश्वर की उपासना या नमाज में लीन होगा उसके सामने चाहे बारात भी क्यों न निकल जाये। उसे मालूम ही नहीं चलेगा परन्तु जो व्यक्ति यह बांट जो रहा हो की कब हिन्दुओं का जुलूस आये कब हम नमाज आरम्भ करे और कब दंगा हो। तो इसका दोष ईश्वर को देना कहां तक उचित है? संसार में जितनी भी हिंसा ईश्वर के नाम पर होती है उसका मूल कारण स्वार्थ है ना कि धर्म है।

नास्तिक लोग धर्म की मूलभूत परिभाषा से अनभिज्ञ है और मत-मतान्तर की संकीर्ण सोच एवं अन्धविश्वास को धर्म समझकर उसकी तिलांजलि दे देते हैं। धर्म संस्कृत भाषा का शब्द है, जो कि धारण करने वाली 'धृ' धातु से बना है। **'धार्यते इति धर्मः'** अर्थात् जो धारण किया जाये वह धर्म है। अथवा लोक परलोक के सुखों की सिद्धि के हेतु सार्वजनिक पवित्र गुणों और कर्मों का धारण व सेवन करना धर्म है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि मनुष्य जीवन को उच्च व

पवित्र बनाने वाली ज्ञानानुकुल जो शुद्ध सार्वजनिक मर्यादा पद्धति है वह धर्म है। धैर्य, क्षमा, मन को प्राकृतिक प्रलोभनों में फँसने से रोकना, चोरी का त्याग, शौच अर्थात् पवित्रता, इन्द्रियों का निग्रह अर्थात् उन्हें वश में करना, बुद्धि अथवा ज्ञान, विद्या, सत्य और अक्रोध ये धर्म के दस लक्षण है। सदाचार परम धर्म है।

अन्धविश्वास मत-मतान्तर की संकीर्ण सोच है। उसे धर्म समझना अन्धविश्वास है। धर्म का आचरण से सम्बन्ध है। मत का सम्बन्ध आचरण से नहीं अपितु मान्यता से है। मान्यता सही भी हो सकती है गलत भी हो सकती है। इसलिये मत को धर्म समझना गलत है। ईश्वर में विश्वास रखने के निम्नलिखित लाभ हैं-

1. आदर्श शक्ति में विश्वास से जीवन में दिशा निर्धारण होता है।
2. सर्वव्यापक एवं निराकार ईश्वर में विश्वास से पापों से मुक्ति मिलती है।
3. ज्ञान के उत्पत्ति कर्ता में विश्वास से ज्ञानप्राप्ति का संकल्प बना रहता है।
4. सृष्टि के रचना कर्ता में विश्वास से ईश्वर की रचना से प्रेम बढ़ता है।
5. अभयता, आत्मबल में वृद्धि, सत्य पथ का अनुगामी बनना, मृत्यु के भय से मुक्ति, परमानन्द सुख की प्राप्ति, आध्यात्मिक उन्नति, आत्मिक शांति की प्राप्ति, सदाचारी जीवन आदि गुण की आस्तिकता से प्राप्ति होती है।
6. स्वार्थ, पापकर्म, अत्याचार, दुःख, राग, द्वेष, ईर्ष्या, अहंकार आदि दुर्गुणों से मुक्ति मिलती है।

तार्किक होना गलत नहीं है। ऋषि दयानंद 19वीं सदी के सबसे बड़े तार्किक थे मगर वह पूर्णरूप से आस्तिक थे। दर्शनों में तर्क को ऋषि कहा गया है। बशर्ते तर्क का प्रयोजन सत्य को ग्रहण करना एवं असत्य का त्याग हो। तर्क का नाम लेकर धर्म का बहिष्कार कर भोगवादी होने के बहाने बनाना अपने आपको अँधेरे में रखने के समान है। नास्तिकता अपने आप में अन्धविश्वास है। अगर किसी व्यक्ति के पैर में फोड़ा निकला हो तो उसका इलाज करना चाहिये न कि पैर काट देना चाहिये। नास्तिकता इसी प्रकार का पाखण्ड है। धर्म के नाम पर किये जाने वाले पाखण्ड को देखकर पाखण्ड के त्याग के स्थान पर धर्म का बहिष्कार करना नास्तिकता रूपी अन्धविश्वास मात्र है।

देशभक्त गुणवान बनो

भारत के नेताओ! जागो, वैदिक पथ अपनाओ तुम।
देशभक्त गुणवान बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम।।टेक।।
प्यारा भारत देश हमारा, जग का था सरदार सुनो।
भारतवासी करते थे सर्वत्र वेद-प्रचार सुनो।
खान-पान-पहरान शुद्ध था, था उत्तम व्यवहार सुनो।
भारत का यह सारी दुनिया, करती थी सत्कार सुनो।
प्राचीन इतिहास पढ़ो तुम, ज्ञानवान बन जाओ तुम।
देशभक्त गुणवान बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम।।1।।
गौतम-कपिल-कणाद, जैमिनि, जैसे थे विद्वान् यहाँ।
हरिश्चन्द्र-शिवि-दधीचि जैसे, दानी हुए महान् यहाँ।
राम-कृष्ण-अर्जुन जैसे थे, महावीर बलवान यहाँ।
सन्ध्या-हवन सभी करते थे, थे सुख के सामान यहाँ।
आज हुई दुर्दशा तुम्हारी, कुछ तो अब शर्माओ तुम।
देशभक्त गुणवान बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम।।2।।
अमेरिका-इंग्लैण्ड-जर्मनी, नेता तुम्हें मानते थे।
विद्याबल में नामी थे तुम, अच्छी तरह जानते थे।
भारत के योद्धा सज्जन थे, कभी न पाप कमाते थे।
निर्बल-निर्बल-निर्दोषों को, वे ना कभी सताते थे।
चन्द्रगुप्त-विक्रम बन जाओ, जग में आदर पाओ तुम।
देशभक्त गुणवान बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम।।3।।
उग्रवाद-आतंकवाद का, भारत में है जोर सुनो।
डाकू-गुण्डे-चोर लफंगे, मचा रहे हैं शोर सुनो।
कुर्सी का लालच त्यागो तुम, बन्द करो गुण्डागर्दी।
देशद्रोही-गद्दारों से, कभी न करना हमदर्दी।
मानवता के हत्यारों को, अब मत मुंह लगाओ तुम।
देशभक्त गुणवान बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम।।4।।
धूर्त-स्वार्थी-हत्यारों का, यदि तुम साथ निभाओगे।
याद रखो, फिर तुम भी गंदे, पापी माने जाओगे।
दुनिया बुरा कहेगी तुमको, कहीं न आदर पाओगे।
खड़े अकेले रह जाओगे, फिर भारी पछताओगे।
अपना भला-बुरा पहचानो, अब मत समय गंवाओ तुम।
देशभक्त गुणवान बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम।।5।।
रूस-चीन-अमरीका-इटली, अरब और ईरान सुनो।
पाकिस्तान-कोरिया-लंका-तुर्की और जापान सुनो।
ये सब मतलब के साथी हैं, सावधान हो जाओ तुम।
वीरों के प्यारे भारत को, अब मजबूत बनाओ तुम।
नन्दलाल 'निर्भय' कहता है, गीत प्रेम के गाओ तुम।
देशभक्त गुणवान बनो, भारत की शान बढ़ाओ तुम।।6।।

-पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक,
आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल मो० 9813845774

भारतीय शिक्षा प्रणाली से ही विश्व में सुख-शान्ति और समृद्धि आ सकती है

❑ महावीर 'धीर' शास्त्री, प्रेमनगर, रोहतक-9466565162

भारत की शिक्षा प्रणाली मानव को प्रकृति, आत्मा, परम आत्मा के सुंदर समन्वय के साथ जीवन को सर्वांगीण रूप में आनन्दमय बनाने की प्रक्रिया का नाम है। भारतीय वाङ्मय में बालक की शिक्षा बालक के गर्भ में आने से पहले माता द्वारा ही आरम्भ हो जाती है। माता-पिता दोनों ही संतान प्राप्ति की इच्छा होने पर अपने को संयमित करके इच्छानुसार उत्तम संतान निर्माण की प्रक्रिया की भावभूमि और आधारभूमि के निर्माण में प्रवृत्त हो जाते हैं! वे उत्तम खान-पान, उत्तम विचार और उत्तम दिनचर्या के साथ जीवनचर्या ध्यान से चलाते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए यथासमय शास्त्र-विधि अनुसार सभी प्रक्रियाएं अपनाकर गर्भाधान करते हैं। गर्भाधान के बाद भी माता के खान-पान, भावनाओं और दिनचर्या का पूरा ध्यान रखा जाता है। पूरा परिवार उत्तम आचार विचार के साथ प्रेममय व्यवहार का पालन करता है। जीवन को संस्कारित रखने के लिए निचित किए सोलह संस्कार निश्चित समय पर कराए जाते हैं। बालक के जन्म के बाद उचित खान-पान और बर्ताव के पालन का अभ्यास बच्चे को धीरे-धीरे कराया जाता है। ज्यों-ज्यों बालक बढ़ता जाता है उसे माता शिष्टाचार की शिक्षा देती रहती है। आयु और ग्रहणशक्ति अनुसार उसे व्यवहारिक और बुद्धि विकास की कहानियां, कविताएं तथा वेदमंत्र कंठस्थ कराए जाते हैं। अक्षर और अंक ज्ञान का भी अभ्यास धीरे-धीरे कराया जाता है।

जब बालक 6-8 वर्ष का हो जाता है तब गुरु की गोद में जाने से पहले उसका उपनयन (गुरु के पास जाना) या यज्ञोपवीत संस्कार किया जाता है। उसे जीवन संकल्प के रूप में तीन कर्तव्यों को पूर्ण करने के लिए तीन तार का यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। इन्हीं कर्तव्यों को पूर्ण करने की तैयारी गुरुजन कराते हैं और रुचि अनुसार अनिवार्य और वैकल्पिक विषयों के ज्ञान का अभ्यास कराया जाताहै। शरीर, प्रकृति, मन, बुद्धि, आत्मा और परम आत्मा का गम्भीर ज्ञान वेद-शास्त्रों के अध्ययन के साथ कराया जाता है। सभी बालकों को शयन, जागरण, व्यायाम, स्नान, ध्यान, ऋतु अनुसार स्वास्थ्यप्रद खान-पान का समान रूप से उचित अभ्यास कराया जाता है। किसी भी बालक से किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं बरता जाता है। मानव की सकल प्रवृत्तियों का शोधन करके उसे सच्चा, संयमित, स्वानुशासित मानव बनाया जाता है। मानवता का अभ्यास करते करते ऐसा मानव देवता का पद प्राप्त करता है। वेदों, षट् शास्त्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों के अध्ययन और संसार की सबसे छोटी तथा सबसे श्रेष्ठ पुस्तक योगदर्शन के अनुसार भारतीय शिक्षा प्रणाली से मनुष्य अपनी आत्मा को परम आत्मा में लीन कर देता है। यह मानव विकास की अंतिम मंजिल है। भारतीय शिक्षा प्रणाली ही मानव को चरम ज्ञान और चरम विकास देती है।

मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद

यह शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ का कथन है कि मानव का ठीक तरीके से निर्माण तभी होता है जब उसकी माता सत् चरित्र और धार्मिक हो। भारतीय मनीषा में जो कर्तव्य सुखी जीवन के लिए धारण करने अनिवार्य हैं, उन्हीं का नाम धर्म है। किसी मत-पंथ या सम्प्रदाय को भारतीय संस्कृति में धर्म नहीं कहा गया है। धर्म सबके लिए समान और अनिवार्य है। इसी प्रकार जिस बालक का पिता धर्मात्मा और विद्वान् हो और फिर गुरु भी विद्वान् जितेन्द्रिय, संतान के समान शिष्यों का पालन करने वाला हो तब मानव का सम्पूर्ण रूप से निर्माण होता है।

इस प्रकार एक उत्तम और स्थायी दिनचर्या पूर्वक दिन रात गुरुजनों के सान्निध्य में ज्ञान विज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति जीवन में अपने ज्ञान का दुरुपयोग नहीं करता है। वह संतुलित रूप में जीवनचर्या चलाता हुआ अपने ज्ञान के सदुपयोग और सद्व्यवहार से जनमानस की सेवा से पुण्यकर्म करता हुआ स्वयं सुखी रहता है और लोगों को भी अपनी सेवा से सुखी और संतुष्ट करता है। भारतीय शिक्षा की यही अनुपम प्रणाली है। इसे अपनाकर ही विश्व में सुख-शान्ति

हो सकती है। भारतीय शिक्षा और गुरु का कार्य यहीं नहीं रुकता है। गुरु ही अपने शिष्य रूपी भावी नागरिक को उसकी योग्यता और सम्पूर्ण व्यक्तित्व के अनुरूप कार्य भी देकर उसे समाज में उतारता है। वह उच्चकोटि के विद्वान् हर तरह से चरित्रनिष्ठ, परमसंयमी शिष्य से ज्ञान बांटने की दीक्षा (संकल्प/शपथ) लेता है। विद्वान् साहसी, धैर्यवान् शिष्य को न्यायकारिता, मानव कल्याण की राजनीति करने की दीक्षा देता है। वैश्य से शत-प्रतिशत उत्तम वस्तु निर्माण और बिना छल और लोभ के उचित वितरण की शपथ लेता है तथा मंदबुद्धि शिष्य से सम स्वभाव के व्यक्ति के पास नियुक्त होकर उसकी सच्चे मन से सेवा की शपथ लेकर उन्हें समाज में उतारता है। गुरु वैवाहिक संबंधों को स्थायी और सुखमय बनाने के लिए भी माता पिता से मिलकर शिष्यों के गुण, अवगुण कार्य, व्यवहार, स्वभाव, योग्यता, रुचियों का मिलान कराके सहयोग करता है। हम श्रेष्ठ गुरुजनों की नियुक्ति करके बालक की शिक्षा, रोजगार और विवाह की जिम्मेवारी गुरुजनों को ही दे दें तो बिना भेदभाव के, बिना व्यय और मंहगे परीक्षणों, साक्षात्कारों के भ्रष्टाचरण से मुक्ति पा सकते हैं। गुरु ही है जो शिष्य को सम्पूर्ण रूप से जान लेता है। गुरुकुल परिवार में रहकर अध्ययन करने वाला शिष्य गुरु के सामने नकल नहीं कर सकता। वह अपनी योग्यता का झूठा दिखावा गुरु के सामने बिल्कुल नहीं कर सकता है। गुरु और गुर्वी रुचि और योग्यतानुसार बिना भेदभाव के कार्य नियुक्ति कर संकते हैं। गुरु और गुर्वी युवक-युवतियों के वैवाहिक संबध स्थायी और सुखकारी बनाने के लिए सबसे उपयुक्त माध्यम बन सकते हैं। विवाह से पहले कार्य नियुक्ति हो। बाद में प्रतिवर्ष सामूहिक रूप से यथासंभव संख्या में संस्था से ही विवाह संस्कार करके युवा जोड़ों को मधुर वाद्यों के नादपूर्वक घरों में छोड़ा जाए। सबको विवाह पूर्व पति पत्नी, पारिवारिक व सामाजिक कर्तव्यों, संतान पालन की सम्पूर्ण शिक्षा भी दी जाए। गृहस्थ आश्रम के बाद वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की अनुपालना भी हो। सामाजिक कार्य तभी श्रेष्ठता से हो पाएंगे। लेकिन यह तभी संभव हो सकेगा जब हम धीरे-धीरे प्रचलित शिक्षा को भारतीयता के अनुरूप ढाल लेंगे। हमें धीरे-धीरे शिक्षा संस्थानों को आवासीय बनाकर उनकी दिनचर्या और पाठ्यक्रम वैदिक पद्धति अनुसार करने होंगे। श्रेष्ठ गुरुजनों और उत्तम आवासीय शिक्षा बिना देश अपराधमुक्त नहीं हो सकता है, क्योंकि शिक्षा के लिए आते जाते छात्र ही गली कूचों और बाजारों में घूम-घूमकर बुराइयां सीखते हैं। इन्हें माता-पिता शिक्षक फौज या पुलिस कोई बुराइयों से नहीं बचा सकता है। सिवाय श्रेष्ठ शिक्षकों के सान्निध्य में श्रेष्ठ आवासीय व्यवस्था वाले वैदिक शिक्षा और व्यवस्था के विद्यालयों से ही बालक चरित्रनिष्ठ बन पाएंगे। तभी समाज और देश भी अपराधमुक्त भी हो सकेगा। दूसरा कोई उपाय नहीं हो सकता है। भारतीय शिक्षा की यही सार्वभौमिक रूपरेखा है, जिससे मानव मानव बन सकता है। इसी शिक्षा से विश्व में समानता, सुख, समृद्धि और शान्ति स्थापित हो सकती है।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य जी ने बेहद ही कर्मठ समाजसेवी श्री संपूर्ण सिंह जी व महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर श्री राजकुमार जी के साथ पौधारोपण कर सभी से अधिक से अधिक पौधे लगाने की अपील की और कहा कि अगर हमें स्वस्थ रहना है तो अपने पर्यावरण को हरा-भरा बनाना ही होगा और यह हम सबकी जिम्मेदारी भी बनती है।

सगोत्र विवाह का निषेध क्यों?

—पंडित जगदेवसिंह सिद्धान्ती

मनुष्य (चाहे पुरुष हो, चाहे स्त्री) में माता-पिता के रज:वीर्य के सम्बन्ध के कारण सन्तान रूप में शारीरिक रक्त आदि अंश अवश्य परम्पर पहुँचते हैं। यह आयुर्वेद का विशुद्ध वैज्ञानिक सिद्धान्त है। इस कारण समान रज:वीर्य के मिलने में सन्तान में कुछ विशेषता उत्पन्न नहीं होती और भाई-बहिन आदि अनेक सम्बन्ध नष्ट हो जाने से सदाचार का नाश और व्यभिचार की वृद्धि होती है, अत: समान गोत्र में विवाह कभी नहीं होना चाहिये। माता आदि का गोत्र भी छोड़ा जावे तो और भी अच्छा है, परन्तु माता की सपिण्डता=छ: पीढ़ियां तो अवश्य छोड़ देनी वैधानिक है। पिता-पितामह-प्रपितामह आदि क्रम से हजारों पीढ़ियों तक पीछे जाना गोत्र कहलाता है। 6 पीढ़ी तक के बालक सपिण्ड कहलाते हैं-अर्थात् 6 पीड़ी ऊपर तक जितने पितृ गोत्र और मातृ गोत्र में पुरुष होंगे वे परस्पर सपिण्ड कहलाते हैं। सातवीं पीढ़ी पर पहुँचकर मातृवंश की सपिण्डता समाप्त हो जाती है, क्योंकि वैज्ञानिक आधार पर माता के रक्त (रज:) का अंश बालक में 6 पीढ़ी तक अवश्य पहुँचता है; अत: इस मर्यादा का विवाह में कभी उल्लंघन नहीं करना चाहिये कि माता के वंश की पीढ़ियों के भीतर के परिवार की कन्या से विवाह सम्बन्ध नहीं होना चाहिये। पिता के वीर्य का साक्षात् सम्बन्ध अवश्य 14 पीढ़ी तक चलता है। उसको ''समानोदक'' कहते हैं। उदक नाम वीर्य का है। अत: पिता के वंश की 14 पीढ़ियाँ समानोदक कहलाती हैं। इन पीढ़ियों के भीतर के पुरुष=सम्बन्धी, बन्धु-बान्धव सनाभि, सकुल्य आदि नामों से पुकारे जाते हैं। इन सबका व्यापक शब्द परिवार और कुटुम्ब कहा जाता है। अनेक परिवारों के समूह को वंश कहते हैं। अर्थात् एक ही वंश में अनेक एक गोत्रीय परिवार रहते हैं। इसी प्रकार अनेक वंशों के समूह को गोत्र कहा जाता है। अर्थात् एक गोत्र में अनेक वंश होते हैं, जिनका गोत्र समान होता है। जब तक गोत्र का नाम बना रहता है तब तक उन सब वंश वालों का एक ही गोत्र कहलाता है। तब उन अपने गोत्र में उत्पन्न हुई किसी भी कन्या से उसी गोत्रीय कुमार का विवाह नहीं होना चाहिये, क्योंकि रक्त संबंध का अंश-स्मरण बना हुआ रहता है। इसी कारण वैदिक विवाह मर्यादा में सगोत्रता का युक्तियुक्त निषेध पाया जाता है। ऐसे ही अनेक गोत्रों के समूह एक संघ को ''कुल'' कहा जाता है।

एक कुल में अवस्था के कारण भिन्न-भिन्न गोत्रों का समावेश हो जाता है। विवाह सम्बन्ध में समान कुलोत्पन्न वर-वधू का विवाह हो सकता है, क्योंकि वहां रक्त सम्बन्ध का नाम मात्र भी नहीं होता, परन्तु गोत्र में विवाह सम्बन्ध त्याज्य है। इसी पवित्र नियम का पालन करती हुई आर्य जाति आज भी शुद्ध रूप में बनी हुई है। यह गोत्र विचार पाखंड और ढोंग नहीं, किन्तु पूर्ण वैज्ञानिक और वैदिक है। इस नियम का पालन करने से सन्तान श्रेष्ठ, सदाचारी, कुलीन, विद्या विभूषित, बलवान, दृढांग और नीरोग बने रहते हैं। विवाह संस्कार के नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये। इस प्रकार के विवाह सम्बन्ध द्वारा ही गृहस्थाश्रम का पालन मर्यादा पूर्वक किया जा सकता है। इसी से मनुष्यों की आयु 100 वर्ष की सामान्य रूप से बनी रहती है। जिन देशों और जातियों में इस नियम का पालन नहीं होता वे शीघ्र पतनावस्था में पहुंच जाते हैं। **(वैदिक धर्म परिचय से)**

आवश्यक सूचना

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि जिन ग्राहकों का जो भी बकाया शुल्क बनता है, वह बकाया शुल्क सभा कार्यालय में जमा करें या मनीऑर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करें ताकि हम आपकी पत्रिका समय पर भेजते रहें। शुल्क भेजते समय आप ग्राहक संख्या व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

—रघुवरदत्त, पत्रिका लिपिक, मो० 7206865945

वेदमन्त्र.... पृष्ठ 3 का शेष....

सकेंगे। वेद के इस मन्त्र में स्वभावत: उठने वाले प्रश्नों को व्यक्त करके जिज्ञासु की जिज्ञासा को तीव्र किया है। जिज्ञासा प्रश्न है और ज्ञान का उसका उत्तर है। मनुष्य स्वतन्त्रता से इन प्रश्नों के उत्तर सोचे और वेद ने जो अगले मन्त्रों में उत्तर का संकेतमात्र किया है उससे सहायता ले तो उसके आत्मा को सन्तोषप्रद फल मिलेगा।

गुरुकुल में प्रान्तीय आर्यवीर दल शिविर का भव्य समापन

- यज्ञ और आर्य सिद्धान्तों को अपने जीवन में आत्मसात करें युवा–कन्हैयालाल आर्य
- हर जिले में भजन-मण्डली करेगी आर्यसमाज और प्राकृतिक खेती का प्रचार–राधाकृष्ण आर्य

कुरुक्षेत्र, 05 जून 2023। वैदिक संस्कृति में गुरु शिष्य को शिक्षा और दीक्षा के माध्यम से शिक्षित करता है। शिक्षा वह है जो गुरु द्वारा शिष्य को साक्षात्, प्रत्यक्ष रूप में प्रशिक्षण के माध्यम से दी जाती है। दीक्षा उसे कहते हैं जो शिष्य शिक्षा पूरी होने के उपरान्त समाज में जाकर मिले हुए ज्ञान का प्रचार-प्रसार करता है, दूसरे लोगों को सन्मार्ग पर चलने और राष्ट्रहित के कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। उक्त शब्द गुरुकुल में चल रहे प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर में आए युवाओं को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक कन्हैयालाल आर्य ने कहे। वे समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पधारे थे। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि शिविर में मिले शारीरिक प्रशिक्षण और बौद्धिक ज्ञान को स्वयं तक सीमित न रखकर दूसरों को भी सिखाएं तथा वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति और ऋषि दयानन्द सरस्वती के अमर संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं। शिविर के दौरान आपकी जीवन-शैली में जो बदलाव आया है, वह आपके व्यवहार में झलकना चाहिए। आप अपने माता-पिता, गुरुजनों का प्रातः चरण-वंदन करें, आर्य समाज के साप्ताहिक समारोह में जाएं जिससे आपसी प्रेम में वृद्धि होगी, रिश्ते मजबूत होंगे। हवन को अपने जीवन में आत्मसात् करें, दैनिक या साप्ताहिक संभव न हो तो मासिक यज्ञ अपने घरों में अवश्य करें।

इस अवसर पर सभाप्रधान राधाकृष्ण आर्य, उपप्रधान देशबन्धु आर्य, ओएसडी टू गर्वनर डॉ० राजेन्द्र विद्यालंकार, उपमंत्री अनुराग खटकड़, रणदीप कादियान, गुरुकुल प्रधान राजकुमार गर्ग, प्राचार्य डॉ० सूबे प्रताप, व्यंवस्थापक रामनिवास आर्य, वैदिक विद्वान् पंकज आर्य, संदीप वैदिक सहित सभा के अंतरंग सदस्य राममेहर आर्य, बलवान आर्य, विशाल आर्य, सुरेन्द्र आर्य व विभिन्न स्कूलों से आए अध्यापकगण उपस्थित रहे। मंच संचालन शिविर संयोजक संजीव आर्य, जयपाल आर्य और विशाल आर्य द्वारा किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य ने युवाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज हर माता-पिता अपने बालक के भविष्य को लेकर चिंतित है क्योंकि समाज में फैली नशाखोरी ने युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार बना दिया है। ऐसे में आर्यसमाज और आर्यवीर दल ही ऐसे संगठन हैं, जो समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने का दम रखते हैं। उन्होंने कहा कि वे स्वयं भी आर्य वीर दल के सिपाही रहे हैं और संगठन में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए आज इस मुकाम पर पहुंचे हैं। उन्होंने मुख्य अतिथि कन्हैयालाल जी को विश्वास दिलाया कि प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी का एक-एक सदस्य आर्य वीर दल की भट्टी में तपकर निकला है। उनकी पूरी टीम समाज में फैली बुराइयों को दूर करने और महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के प्राकृतिक खेती मिशन को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संकल्पबद्ध है। उन्होंने कहा कि प्रतिनिधि सभा जिला स्तर पर भजन मंडली और व्यायाम शिक्षकों के माध्यम से वेदप्रचार के कार्य को गति प्रदान करेगी जो गांव-गांव और घर-घर जाकर ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज के सिद्धान्तों, प्राकृतिक खेती का प्रचार करने के साथ-साथ युवाओं को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से मजबूत बनाएंगी। उन्होंने शिविर में आए युवाओं द्वारा किये गये सूर्य नमस्कार, डम्बल, लेजियम, जूडो-कराटे, पी.टी., लाठी आदि प्रदर्शन और शिविर संयोजक संजीव आर्य व उनकी टीम में शामिल सभी व्यायाम शिक्षकों के प्रयासों की सराहना की।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के ओएसडी डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने कहा कि आर्यवीरों ने सामान्यतः 5

महीनों में सीखे जाने वाले पाठ्यक्रम को मात्र 3 दिन में सीख लिया और शानदार प्रदर्शन भी किया, यह अद्भुत है। उन्होंने कहा कि हमारी युवा पीढ़ी को भविष्य में आने वाले खतरे का आभास तक नहीं है, नशे ने युवाओं के साथ-साथ हजारों परिवारों को बर्बाद कर दिया है। युवा पीढ़ी एक ऐसी जीवन-शैली का शिकार हुई है जिसमें चिन्तन, लक्ष्य और स्पीड को खो दिया है, युवाओं को अपनी मूल समस्या ही मालूम नहीं है। यह सब जीवन में अनुशासन और सूझबूझ की कमी के कारण हो रहा है। इसका समाधान है अनुशासन और अनुशासन आता है एक उन्नत जीवन-शैली से। आर्यसमाज ने हमेशा युवाओं को नई दिशा देने का कार्य किया है। आर्य वीर दल के माध्यम से युवाओं में नई क्रांति का आगाज किया है, ऐसे शिविरों के माध्यम से आर्यसमाज देश के युवाओं को नशा, कन्या भ्रूण हत्या, ऊंच-नीच, पाखण्ड, अज्ञानता जैसी बुराइयों से बचाता है और उनकी ऊर्जा, उनकी शक्ति सही दिशा प्रदान कर राष्ट्र निर्माण का कार्य करता है। जनेऊ का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि जनेऊ मात्र एक धागा नहीं है, बल्कि एक संकल्प है, यह हमें अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराता है, युवाओं को जिम्मेदार बनाता है इसलिए वैदिक संस्कृति और अपनी परम्पराओं से जुड़े और एक सभ्य समाज का निर्माण करें।

समारोह को वैदिक विद्वान् पंकज आर्य, वरिष्ठ भजनोपदेश जयपाल आर्य ने भी सम्बोधित किया। इस दौरान आर्यवीरों ने 5 दिनों में सिखाए गये लाठी, डम्बल, लेजियम, सूर्य नमस्कार, सर्वांग सुन्दर व्यायाम, दण्ड-बैठक, योगासन, पी.टी. आदि का शानदार प्रदर्शन किया, जिसे देख हॉल में मौजूद सभी अतिथिगण मंत्रमुग्ध हो गये। गुरुकुल प्रबंधक समिति द्वारा मुख्य अतिथि श्री कन्हैयालाल आर्य, विशिष्ट अतिथि देशबन्धु आर्य, अनुराग खटकड़ और रणदीप कादियान को शॉल और ओ३म का स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। वहीं आर्यवीरों को प्रशिक्षण देने वाले शिविर संयोजक संजीव आर्य, भजनोपदेशक जयपाल आर्य, पंकज आर्य, मनीराम आर्य, जसविन्द्र आर्य व उनकी पूरी टीम को मुख्य अतिथि एवं सभाप्रधान द्वारा पुरस्कृत किया गया, इसके अलावा शिविर में जिन-जिन शिक्षण संस्थानों के बच्चे शामिल हुए वहां के शिक्षकों को भी मंच पर ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

युवाओं को संस्कारवान् बना रहा आर्यवीर दल शिविर

पंजाब सभा के मंत्री गुरुकुल शिविर में पहुंचे, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के कार्यों की सराहना की

कुरुक्षेत्र, 3 जून 2023। गुरुकुल में चल रहे प्रान्तीय आर्य वीर दल शिविर में आए सैकड़ों युवाओं में आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा संस्कारवान् बनाया जा रहा है साथ ही उन्हें शारीरिक रूप से मजबूत बनाने के लिए योगासन भी सिखाए जा रहे हैं। ये आर्यवीर समाज में जाकर न केवल सामाजिक बुराइयों को दूर करेंगे बल्कि उन्नत राष्ट्र के निर्माण में सहयोगी साबित होंगे। ये शब्द आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री प्रेम भारद्वाज ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चल रहे शिविर के निरीक्षण के उपरान्त आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए कहे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राधाकृष्ण आर्य, शिविर संयोजक संजीव आर्य, महाशय जयपाल आर्य, आचार्य दयाशंकर शास्त्री, वैदिक विद्वान् पंकज आर्य, संदीप आर्य, राममेहर आर्य, विशाल आर्य आदि उपस्थित रहे। प्रेम भारद्वाज ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा चलाए जा रहे वेदप्रचार, नशामुक्ति अभियान, प्राकृतिक खेती मिशन, घर-घर यज्ञ और संस्कृति रक्षा आदि कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में पहली बार आए हैं मगर गुरुकुल के साफ-स्वच्छ और मनोहारी वातावरण ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया, वास्तव में महामहिम राज्यपाल ने अपनी दूरदर्शी सोच से जर्जर हो चुके इस गुरुकुल को देश-दुनिया का रोल मॉडल बना दिया। उन्होंने सभी आर्यवीरों से शिविर में सीखे शारीरिक प्रशिक्षण और बौद्धिक में दिये गये ज्ञान को अपने जीवन में आत्मसात् कर समाज की भलाई करने के लिए प्रेरित किया। इससे पूर्व, शिविर संयोजक संजीव आर्य ने सभा प्रधान राधाकृष्ण आर्य जी की उपस्थिति में अतिथियों को शिविर में प्रशिक्षण ले रहे आर्यवीरों की अलग-अलग टोली का निरीक्षण कराया। सभी अतिथियों ने व्यायाम शिक्षक नरेश आर्य द्वारा सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, योगासन, अनिल आर्य द्वारा डम्बल, प्रवीण आर्य द्वारा लेजियम, रामबीर आर्य द्वारा दण्ड बैठक, सोहनवीर आर्य द्वारा लाठी चलाना, शुभम् आर्य द्वारा जूडो-कराटे, महाबीर आर्य द्वारा मार्चिंग आदि टोलियों का संक्षिप्त प्रदर्शन देखा और आर्यवीरों व प्रशिक्षकों के प्रयास को खूब सराहा। सायंकालीन सभा में आर्यवीरों को भजनोपदेशक जयपाल आर्य, जसविन्द्र आर्य व संदीप वैदिक ने ईश्वर भक्ति और देशभक्ति गीत सुनाए और अपने बड़े-बुजुर्गों, माता-पिता व गुरुजनों का हमेशा आदर-सम्मान करने का संकल्प कराया।

महर्षि दयानन्द ने नारी को दिलाया समाज में सम्मान

प्रान्तीय शिविर में वीरांगनाओं ने लिया सर्वांग सुन्दरम् व्यायाम का प्रशिक्षण

कुरुक्षेत्र, 8 जून 2023। आर्यसमाज के संस्थापक एवं महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी को उसकी आत्मिक शक्ति का परिचय कराते हुए समाज में सम्मान से जीने का अधिकार दिलाया। यह शब्द गुरुकुल कुरुक्षेत्र में चल रहे प्रान्तीय आर्य वीरांगना दल शिविर के दूसरे दिन 850 आर्य वीरांगनाओं को बौद्धिक प्रवचन करते हुए शिविर संयोजक संजीव आर्य ने कहे। उन्होंने कहा कि एक समय वह था जब बालिकाओं को वेद-वाणी सुनने और पठन, पाठन को अधिकार नहीं था। यहाँ तक कि नारी शक्ति को शिक्षा से भी वंचित रखा जाता है, बाल-विवाह के बाद यदि कोई बालिका बचपन में विधवा हो जाती थी तो उसे जीवन भर विधवा रहकर ही जीवनयापन करना होता था, जो उनके ऊपर घोर अत्याचार था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी शक्ति को जागरूक किया और बाल-विवाह प्रथा को बंद करवाकर विधवा-विवाह, नारी शिक्षा को बढ़ावा देते हुए नारी शक्ति को जागरूक करके समाज में सम्मान से जीने के लिए प्रेरित किया। प्रात:कालीन सत्र में संजीव आर्य एवं मुख्य शिक्षिका सुमेधा आर्या के नेतृत्व में सभी आर्य वीरांगनाओं ने पी.टी. एवं सर्वांग सुन्दरम् व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार आदि का प्रशिक्षण का प्रशिक्षण प्राप्त किया। गुरुकुल में आर्य वीरांगनाओं के साथ आयी लगभग 50 माताओं को सूर्यदेव आर्य ने प्राणायाम एवं सूक्ष्म व्यायाम का प्रशिक्षण दिया। तत्पश्चात् सभी आर्य वीरांगनाओं ने वैदिक मंत्रों के साथ हवन कुण्ड में आहुतियां डालकर यज्ञ का प्रशिक्षण लिया। हवन के उपरान्त महाशय जयपाल आर्य एवं जसविन्द्र आर्य द्वारा आर्य वीरांगनाओं को ईश्वर भक्ति एवं राष्ट्रभक्ति गीतों के माध्यम से जीवन में हमेशा प्रभु को स्मरण रखने और अपने देश की मिट्टी से प्रेम करने का आह्वान किया। बता दें कि महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के पावन सान्निध्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के यशस्वी प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य के मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के पावन परिसर में प्रान्तीय आर्य वीरांगना दल शिविर लगा है जिसमें हरियाणा के कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, पानीपत और जींद जिल के 140 गांवों से 850 से अधिक बेटियों जीवन निर्माण एवं आत्म सुरक्षा का प्रशिक्षण लेने के साथ-साथ वैदिक संस्कृति और आर्य सिद्धान्तों को अपने जीवन में आत्मसात कर रही हैं। शिविर में बेटियों के साथ विभिन्न स्कूलों से 50 से अधिक शिक्षिकाएं और माताएं भी आईं है जो उत्साह के साथ शिविर में सूक्ष्म व्यायाम का प्रशिक्षण ले रही हैं बल्कि सायंकालीन सभा में हरयाणवी गीतों से बालिकाओं का मनोरंजन भी कर रही हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा आयोजित आर्य बाल भारती स्कूल पानीपत में सम्पन्न हुए आर्य वीर दल शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने शिरकत की। समापन समारोह में उन्होंने कहा कि आर्य यानी श्रेष्ठ और वीर दल अर्थात् वीरों का दल, आप वीरों का दल हैं, जो महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करेंगे। समाज को शिखर पर पहुंचाने में आपकी अग्रणी भूमिका होगी और यहां से आपने केवल शारीरिक शिक्षा ही नहीं अपितु सांस्कृतिक एवं संस्कारों की शिक्षा का पाठ भी सीखा है, जो कि मुझे उम्मीद ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास भी है कि आप अधिक से अधिक युवाओं को सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूक करने का कार्य करेंगे।

गुरुकुल में आर्य वीरांगना दल शिविर का शानदार आगाज, 850 युवतियां शिविर में पहुंची

- आर्यसमाज एक लाख युवाओं को देगा प्रशिक्षण–स्वामी आदित्यवेश जी।
- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम नारी शिक्षा और समान अधिकार पर बल दिया–सभाप्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य।

कुरुक्षेत्र, 7 जून 2023। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मंत्री एवं सुप्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आदित्यवेश ने कहा कि आर्यसमाज इस वर्ष युवा चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से एक लाख युवाओं को संस्कृति रक्षा, शक्ति संचय और आत्मरक्षा का प्रशिक्षण देगा ताकि युवा एक सकारात्मक सोच के साथ अपनी ऊर्जा का उपयोग देश की उन्नति हेतु करें। वे आज गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आर्य वीरांगना दल शिविर के शुभारम्भ अवसर पर बोल रहे थे। समारोह में उनके साथ आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक कन्हैयालाल आर्य, प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य, वैदिक विद्वान् डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, गुरुकुल के प्रधान राजकुमार आर्य, आचार्य विरजानन्द, राममेहर आर्य, सभा के मीडिया प्रभारी प्रदीप दलाल, विशाल आर्य, रोजड़ गुजरात से पधारी विदुषी बहन ज्योति, विदुषी बहन रेशमा, मुख्य शिक्षिका सुमेधा आर्या सहित विभिन्न विद्यालयों से आर्यां शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं। मंच संचालन शिविर संयोजक संजीव आर्य द्वारा किया गया। बता दें कि महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के पावन सान्निध्य में गुरुकुल में युवतियों का आर्य वीरांगना दल जीवन निर्माण शिविर लगाया गया है जिसमें हरियाणा के लगभग 140 गावों से 850 से अधिक युवतियां प्रशिक्षण ले रही हैं।

स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि स्त्री-शिक्षा और स्त्रियों को समान अधिकार की बात सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने कही थी और आर्यसमाज के प्रयासों से ही सर्वप्रथम कन्या पाठशाला और कन्या गुरुकुल पंजाब में खोला गया। उन्होंने कहा कि माता संतान का निर्माण करने वाली होती है, शिक्षित महिलाएं ही शिक्षित और सभ्य समाज का निर्माण करने में सक्षम है। उन्होंने शिविर में आर्यां 800 से अधिक युवतियों से अनुरोध किया कि वे इस शिविर में आत्मरक्षा प्रशिक्षण और बौद्धिक ज्ञान प्राप्त कर अपने गांव-मुहल्ले की दूसरी युवतियों को भी इसे सिखाएं ताकि वे किसी विकट परिस्थिति में स्वयं की रक्षा करने में सक्षम बनें। दूसरे मत-मतान्तरों का उदाहरण देकर स्वामी जी ने कहा कि 35 करोड़ बौद्ध समुदाय में आज तक कोई महिला दलाई लामा नहीं हुई, 214 करोड़ ईसाइयों में आज तक कोई महिला पोप नहीं बन सकती, 150 करोड़ मुस्लिमों में आज तक कोई महिला मौलवी नहीं हुई, केवल आर्यसमाज एक ऐसा संगठन है जहां महिलाओं को समान अधिकार और सम्मान दिया जाता है। आर्यसमाज से अनेक विदुषियां निकली है। दक्षिण अफ्रीका का उदाहरण देकर उन्होंने बताया कि वहां तो 85 प्रतिशत आर्यसमाजों में महिला पुरोहित हैं। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ने हमेशा से लोगों की मानसिकता बदलने का काम किया है, जो आज भी पूरी ईमानदारी से समाज को नई दिशा प्रदान कर रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि पुराने समय में पंजाब सभा में सबसे अधिक भजन मंडली और प्रचारक हुआ करते थे मगर वर्तमान में आर्य प्रतिनिधि सभा की युवा टीम, उससे दो कदम आगे बढ़ते हुए बड़े स्तर पर भजन मंडली और प्रचारकों की नियुक्ति कर ऋषि दयानन्द के संदेश और आर्यसमाज के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने का पुनीत कार्य कर रही है, निश्चित तौर पर वे बधाई के पात्र हैं।

सभा के संरक्षक कन्हैयालाल आर्य ने नशाखोरी पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि समाज में फैली इस बीमारी ने लाखों घरों को तबाह किया है। बहन, बेटियों की यह

जिम्मेदारी है कि वे समाज से इस बुराई को मिटाने में सहयोग दें, घर से बाहर जाते हुए अपने भाई से दूसरों की बहन-बेटी का सम्मान करने और उनके सम्मान की रक्षा करने का संकल्प लें ताकि युवतियों के साथ होने वाली छेड़छाड़ और दुष्कर्म जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हों।

सभाप्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य ने कहा कि आज तो लड़का और लड़कियां एक ही स्कूल, कॉलेज में साथ-साथ पढ़ाई कर सकते हैं, शिक्षित वर्ग में लड़कियों को समानता का अधिकार भी प्राप्त हैं मगर पुराने समय में हालात ऐसे नहीं थे। समाज में सतीप्रथा जैसी कुरीतियों के अलावा नारी को न वेद पढ़ने का अधिकार था और न ही यज्ञ करने का। आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने नारी को ये अधिकार दिलाए। उन्होंने कहा कि हमारे देश की नारी क्षत्रिय गुणों से परिपूर्ण थी जिन्होंने क्रूर आतंकी तैमूर लंग की लाखों की सेना को मौत के घाट उतार दिया था। उन्होंने शिविर में आए तमाम बेटियों से शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर समाज में फैली कुरीतियों का दूर करने का आह्वान किया। उन्होंने बेटियों से अपने गांवों में किसानों को महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के प्राकृतिक खेती मिशन से जोड़ने के लिए भी आग्रह किया।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी के ओ.एस.डी. डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार ने बेटियों से उच्च शिक्षा और वैदिक संस्कारों को ग्रहण कर उन्नत समाज के निर्माण में भागीदार बनने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि एक बेटी के शिक्षित होने से तीन परिवारों का निर्माण होता है, अत: बेटियों का शिक्षित और संस्कारवान् होना बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिविर में दिये जाने वाले हवन, सन्ध्या, बौद्धिक ज्ञान सहित सभी कलाओं में पारंगत होकर अपने घर-परिवारों में दूसरी युवतियों को इसका प्रशिक्षण दें। अन्त में गुरुकुल के प्रधान राजकुमार आर्य ने उद्घाटन समारोह में पधारे सभी अतिथियों एवं शिविर में प्रशिक्षण दिने आयीं सभी शिक्षिकाओं व अनेक विद्यालयों से पधारीं अध्यापिकाओं का गुरुकुल में पहुंचने पर आभार जताया। साथ ही सभा प्रधान के कर-कमलों द्वारा स्वामी आदित्यवेश जी व आचार्य विरजानन्द जी को शॉल व ओ३म् का स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

सोचिए मत बस कर डालिए

कई बार लगता है बेकसद बस यूं ही जिए जा रहे हैं। हँसी-खुशी चेहरे के बनावटीपन का हिस्सा बन बैठी है। हम भूलते जा रहे हैं खुद को, झूठा दिलासा देकर कि वक्त बेवक्त किस्मत करवट जरूर लेगी। किस्मत भी जब बेवफाई पर उतारू हो तो जिंदगी बेमकसद बन जाती है। बस हम जिंदगी काटे जा रहे हैं और जिंदगी हमें काटे जा रही है। इस काटमकाट के खेल में कटना हमें ही है। पैसे हमारी जरूरत हो सकते हैं लेकिन मानसिक सन्तुष्टि नहीं, क्योंकि अगर ऐसा होता तो सबसे ज्यादा अमीर लोग नींद की गोलियों के भरोसे अपना आराम गिरवी ना रखते। वे सबसे खुशगवार होते। जबकि सबसे अधिक तनाव में सबसे अमीर लोग ही शामिल है, लेकिन कभी इसके पीछे कारणों को किसी ने समझने की कोशिश नहीं की, कि आखिर ऐसा क्यों। फिर सबसे खुशगवार आखिर है कौन, जो अपने सपनों के लिए जीया और उन्हें पाने के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया और ऐसा जीया कि बेहद कम में भी अपार खुशियों का मालिक बन बैठा। आप सब का तो पता नहीं लेकिन मेरे मन में जरूर खुद के वजूद को लेकर बहुत सारे सवालात जेहन को चीरते चले जाते हैं। क्या मैं जो हूं यही करने के लिए इस जीवन में आया। क्या मैं खुश हूँ। कुछ कसर सी है जो रह रहकर कचोटती है, मन उदासी और नकारात्मकता से भर जाता है कि जिंदगी अभी अधूरी है। सपने सच होने बाकी हैं लेकिन क्या हम अपने सपनों को पूरा करने का माद्दा रखते हैं। या बस सब किस्मत और रामभरोसे छोड़ा है कि लॉटरी लगे तो लगे भगवान, बस टिकट ना खरीदनी पड़े। मैं टाईमपास करने के लिए नहीं जीना चाहता। मैं सिर्फ पैसों और समृद्धि के लिए भी नहीं बल्कि जीना चाहता हूं अपनी खुशी, जुनून और सपनों के लिए, जो देखे जरूर बन्द आंखों से लेकिन उन्हें खुली आँखों से पूरा करना चाहता हूँ। अन्यथा वह सपने मात्र शेखचिल्ली के सपने में बनकर रह जाएंगे, क्योंकि जिन सपनों के लिए कोई व्यक्ति संघर्ष, मेहनत और अपना सब कुछ समर्पित करना नहीं चाहता, तो भला ऐसे सपने पूरे हो तो कैसे हों। मैं नहीं चाहता कि आज से 30 या 40 साल बाद जब मैं जीवन का सार संक्षेप निकालूं तो मैं सिर्फ और सिर्फ कुछ न कर पाने पर अपने आप को कोसता चला जाऊं, बल्कि जब अपने जीवन के फ्लेशबैक में जाऊं तो एक विज़यी मुस्कान मेरे झुर्रियों से भरे चेहरे पर जीवन विजय का शंखनाद करे। हो सकता है कि आपके सपने पूरे ना हो लेकिन कम से कम आपको यह सब्र तो रहेगा ही कि आपने उन्हें जमीनी स्तर पर मेहनत कर अमलीजामा पहनाने की कोशिश तो की। इसलिए सोचिए मत, बस कर डालिए भईया, छोटी सी जिंदगी है, ज्यादा सोचोगे तो सोचने भर में बीत जाएगी और जब करने की बारी आएगी तब जीवन से रुख़सत होने की घड़ी आ जाएगी और तब आपके जीवन की सफलता और असफलता का आंकलन दूसरे करेंगे।

-प्रदीप दलाल, स्वतंत्र पत्रकार और स्टेट डायरेक्टर डायरेक्टर प्रेस, आईटी एवं जनसंपर्क विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा

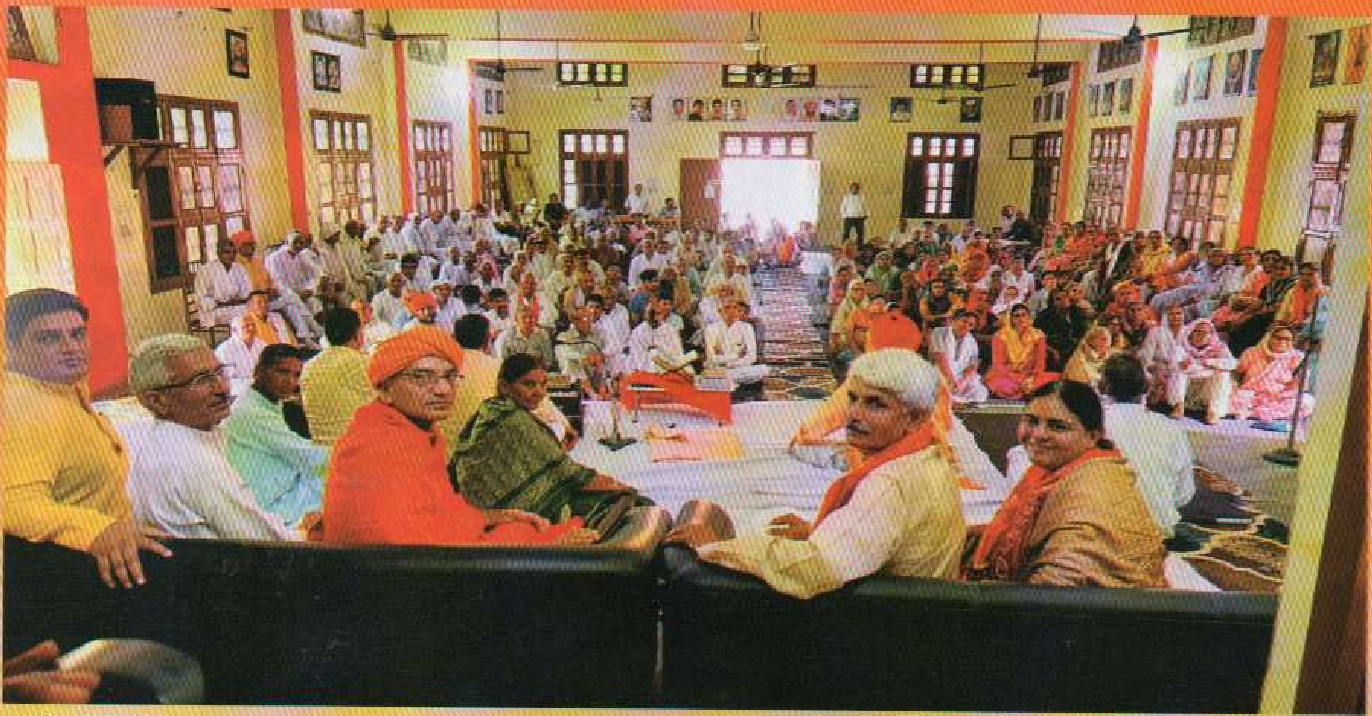

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्दमठ रोहतक के मासिक वैदिक सत्संग (दिनांक 4 जून 2023) के दौरान मंच पर उपस्थित प्रोफेसर राजवीर सिंह जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शरणजीत कौर, स्वामी शान्तानन्द जी महाराज सुन्दरपुर कुटिया रोहतक, डॉ० जगदेव सिंह विद्यालंकार तथा सभा के उपमन्त्री डॉ० अनुराग खटकड़ एवं बहन दया आर्या आदि मंच की शोभा बढ़ाते हुए एवं अन्य उपस्थित श्रोतागण कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्दमठ रोहतक के मासिक वैदिक सत्संग के दौरान प्रोफेसर राजवीर सिंह जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शरणजीत कौर जी को सम्मानित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री डॉ० अनुराग खटकड़, सभा के कार्यालयाधीक्षक श्री सत्यवान आर्य, डॉ० जगदेवसिंह विद्यालंकार, श्री महावीर 'धीर' रोहतक, वेदप्रचार मण्डल रोहतक के प्रधान श्री सुभाष सांगवान, बहन दया आर्या एवं साथ में बैठे आचार्य संतराम जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में गुरुकुल शादीपुर यमुनानगर में आर्य वीर दल के पांच दिवसीय शिविर के समापन के उपलक्ष्य में शोभा यात्रा को ओ३म् का ध्वज दिखाकर रवाना करते आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा प्रधान सेठ राधाकृष्ण आर्य। इस दौरान उन्होंने सभी आर्य वीरों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं और कहा कि समाज में व्याप्त बुराइयों को जड़ से मिटाने के लिए कृतसंकल्प हो।

श्री ....

पता ....

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

– सम्पादक उमेद शर्मा